Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

भारतीय विदेश नीति का बदलता स्वरूप (1947-2018)

Mohit*

M.A. (Political Science), NET Qualified

शोध आलेख:- *विदेश नीति और राजनय को अंतराष्ट्रीय संबंधों के संचालन की प्रक्रिया के यान के दो पहिए कहा जा सकता है। आज कोई भी देश आत्मनिर्भर नहीं है। राज्यों की एक दूसरे पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। व्यक्तियों की भांति, राज्य भी अपने हितों की अभिवृद्धि का निरंतर प्रयास करते रहते है। इन हितो को राष्ट्रीय हित कहते है। प्रत्येक राज्य अपने राष्ट्रीय हितो की सुरक्षा के लिए विदेश नीति का निर्धारण करता है। किसी भी राज्य की विदेश नीति मुख्य रूप से कुछ सिद्धांतो, हितो एवं उद्देश्यों का समूह होता है जिनके माध्यम से वह राज्य दूसरे राष्ट्रों के साथ संबंध स्थापित करके उन सिद्धांतो की पूर्ति करने हेतु कार्यरत रहता है।*

भारत ने स्वतंत्रता के बाद जिस विदेश नीति का निमार्ण किया वह देश की सभ्यता, संस्कृति तथा राजनीतिक परंपरा को प्रतिबिंबित करती है। भारत की विदेश नीति निर्माताओं के समक्ष प्राचीन विद्वान कौटिल्य का दर्शन उपलब्ध था। प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने समाट अशोक के आदर्शों पर चलने का निश्चय किया और अंतराष्ट्रीय शांति तथा अंतराष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान जैसे मूल्यों को संविधान में शामिल किया। तथा गुटनिरपेक्षता को अपनी विदेश नीति में महत्वपूर्ण स्थान दिया।

मुख्य शब्द:- *विदेश नीति, राजनय, गुटनिरपेक्षता, कश्मीर समस्या, डोकलाम विवाद, संयुक्त राष्ट्र संघ, परमाणु परीक्षण।*

----------X----------

शोध प्रविधि:-

इस शोध पत्र को तैयार करने के लिए आंकड़े/तथ्य द्वितीयक स्त्रोतों से जुटाए गए हैं। इस शोध पत्र में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर तर्क प्रस्तुत किए हैं जो शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों तथा ज्ञान से प्राप्त किए है। ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

प्रमुख बिंदु

- विदेश नीति का अर्थ।
- भारत की विदेश नीति।
- विदेश नीति का प्रभाव।
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय विदेश नीति का महत्व।
- मोदी युग तथा भारतीय विदेश नीति।

परिचय:

सबसे पहले प्रश्न यह उठता है कि विदेश नीति क्या है? साधारण शब्दों में विदेश नीति का अर्थ है उन सिद्धांतो का समूह जो एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के साथ अपने संबंधों के दौरान अपने राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने के लिए अपनाता है। विदेश नीति में राष्ट्र के वे सभी कार्य शामिल होते है, जिसके द्वारा वह दूसरे देशों के व्यवहार में परिवर्तन लाने का प्रयत्न करता है तथा अंतराष्ट्रीय वातावरण में अपने व्यवहार को संयोजित करता है। विदेश नीति का लक्ष्य दूसरे राष्ट्रों के व्यवहार को सफलतापूर्वक बदलना होता है। लेकिन बहुत से विद्वान इस व्याख्या को उचित नहीं मानते। उनके विचार में विदेश नीति का उद्देश्य हमेशा परिवर्तन नहीं होता, कभी-कभी या बहुत बार उनका लक्ष्य दूसरे देशों के व्यवहार को बदलना तथा उसे व्यवस्थित करना या बनाए रखना भी होता है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि विदेश नीति सिद्धांतो तथा साधनों का एक समूह है, जो राष्ट्र द्वारा राष्ट्रहित को परिभाषित करने, अपने उद्देश्यों का औचितय सिद्ध करने तथा उन्हे प्राप्त करने के लिए अपनाये जाते है।

www.ignited.in

नेहरू युग में भारतीय विदेश नीतिः-

स्वतंत्रता के बाद प्रभम बार भारत को अपनी विदेश नीति स्वयं तैयार करने का अवसर प्राप्त हुआ। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू पर यह जिम्मेदारी थी कि वह अन्य राष्ट्रों के से मधुर संबंध बनाते हुए भारत का विकास करे। नेहरू जी ने दूरदर्शिता का परिचय देते हुए गुटनिरपेक्षता को भारतीय विदेश नीति का एक अंग बना लिया।

भारत ने तत्कालीन दोनों गुटों से असंलग्नता बनाए रखते हुए। स्वतंत्र अस्तित्व को कायम किया।

नेहरू जी ने भारतीय विदेश नीति में अंतराष्ट्रीय शांति को बढावा दिया तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों में सहयोग किया। पराधीन राष्ट्रों की स्वतंत्रता तथा नव स्वतंत्र राष्ट्रों को साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के चंगुल से बचाया।

नवंबर 1946 में संयुक्त राष्ट्र की महासभा में भारत ने दक्षिण अफ्रिका में जातीय भेदभाव को समाप्त करने का प्रस्ताव रखा। 1954 में भारत-चीन के बीच पंचशील समझौता हुआ जो दो राष्ट्रों में सौहार्द तथा शांतिपूर्ण संबंध स्थापित करने का अनूठा प्रयास था परंतु 1962 में चीन द्वारा भारत पर आक्रमण भारतीय विदेश नीति की असफलता का संकेत देती है। लेकिन नेहरू युग में भारतीय विदेश नीति अपनी परकाष्ठा पर थी।

शास्त्री युग में भारत की विदेश नीतिः-

लाल बहादुर शास्त्री लगभग पौने दो वर्ष भारत के प्रधानमंत्री रहे। उनके समय में भारत की विदेश नीति ने एक नया मोड लिया। 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया जिसका भारतीय सेना ने मुंहतोड जवाब दिया। इसके बावजूद भी भारत सरकार ने शांति की पहल कर अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। शास्त्री जी ने तमिलो के प्रवास की समस्या का भी समाधान किया।

इंदिरा गांधी की विदेश नीति का प्रथम कालः-

शास्त्री जी के देहांत के बाद इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनीं। 1971 में भारत-पाक युद्ध में बडी जीत ने उनकी छवि को चार चाँद लगा दिए तथा बांग्लादेश के निर्माण में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही। भारत तथा सोवियत संघ में इस काल में काफी घनिष्ठ मित्रता हुई। 1974 में भारत ने एक परमाणु संपन्न देश बनना भी भारतीय विदेश नीति के सफलतम प्रयोग का उदाहरण है। इंदिरा जी के काल में आर्थिक और सैनिक आत्मनिर्भरता पर जोर, पड़ोसी देशों के साथ घनिष्ठ संबंध चीन से तनाव शैथिल्य तथा व्यवहारिक असंलग्नवाद पर जोर दिया गया।

जनता सरकार की विदेश नीति का काल (1977-1980):-

जनता सरकार की विदेश नीति का काल, राष्ट्रीय सहमति का विदेश नीति का काल कहलाता है। जनता सरकार में विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 'निरंतरता एवं बदलाव के साथ राष्ट्रीय सहमति' की विदेश नीति पर जोर देते हुए मूलभूत विदेश नीति में कोई बदलाव नहीं किया। प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को विशुद्ध गुटनिरपेक्षता की नीति का जनक भी कहा जाता है।

इंदिरा गांधी की विदेशनीति का द्वितीय काल (1980-84):-

1980 में सोवियत संघ के अफगानिस्तान में हस्तक्षेप पर भारत के राष्ट्रीय हिता की रक्षा करने के लिए बिना सोवियत संघ का नाम लिए हस्तक्षेप की आलोचना भी की। इंदिरा गांधी के काल में हिंद महासागर में महाशक्तियों की नौ-सैनिक प्रतिद्वन्द्वता को खत्म करने के लिए नौ-सैनिक प्रतिद्वन्द्वता का तीव्र विरोध किया। 1982 में उन्होने इसे 'संकट का क्षेत्र' कहना शुरू किया। इंदिरा गांधी के काल में पाकिस्तान, चीन तथा अमेरिका से भी अच्छे संबंध स्थापित करने के प्रयास किए गए।

राजीव गांधी काल (1984-1989)

श्रीमती इंदिरा गांधी के निधन के बाद राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने। उन्होनें भारत की विदेश नीति को व्यवहारिक रूप प्रदान किया। उन्होंने अंतराष्ट्रीय समस्याओं के प्रति प्रगतिशील तथा नमनीय कदम उठाए। दक्षिण अफ्रिका की जातीय विभेद की नीति का विरोध किया तथा तमिल समस्या के समाधान का भी प्रयास किया।

गठबंधन युग तथा भारतीय विदेश नीतिः-

राजीव गांधी के देहांत के बाद कोई भी दल स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने में सफल नहीं हो सका। उनके बाद निम्न प्रधानमंत्री बने जो कुछ समय के लिए सत्ता में रहे।

www.ignited.in

विश्वनाथ प्रताप सिंह -

वी.पी. सिंह के कार्यकाल में इंद्रकुमार गुजराल विदेश मंत्री के पद पर कार्यरत थे। खाडी युद्ध के समय वी.पी सिंह ने किसी भी पक्ष का साथ न देने का निर्णय लिया। 1990 में भारत और पाकिस्तान के संबंधों को भी मधुर बनाने का प्रयास किया। राजीव गांधी द्वारा श्रीलंका में नियुक्त शांति बल को 1990 में वापिस बुलाकर वी.पी. सिंह ने साहसिक कार्य किया।

चंद्रशेखर:-

11 महिने बाद ही वी.पी की सरकार नवम्बर 1990 में गिर गई और चंद्रशेखर अगले प्रधानमंत्री बने। चंद्रशेखर सरकार ने कुवैत पर आक्रमण के लिए ईराक की निंदा की। खाडी युद्ध के समय अमेरिका के विमानों को भारत में उतर कर ईधंन प्राप्त करने की सुविधा दी।

पी.वी. नरसिंह राव:-

राव सरकार ने विदेश नीति की ओर ध्यान देते हुए कश्मीर विवाद को हल करने का प्रयास किया। तथा चीन के साथ मधुर सबंध बनाने के लिए वार्ताएं की। वैश्वीकरण की नीति को अपनाकर राव सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाया।

एच.डी. देवगौड़ा:-

तेरह राजनीतिक दलों से बनी सरकार में विदेशी मामलों का अनुभव नहीं था। परंतु इंद्र कुमार गुजरात ने यह भार संभाल लिया। गुजराल ने दक्षिण एशिया के देशों को रियायते देकर संबंध सुधारने का प्रयास किया। चीन तथा भारत के संबंधों को सुधारने के प्रयास किए गए। 1996 में भारत तथा बांग्लादेश के बीच गंगाजल के बंटवारे का 30 वर्षीय समझौता हुआ जिससे दोनों देश संतुष्ट थे।

इंद्रकुमार गुजराल:-

अप्रैल 1997 में एक राजनीतिक संकट के बाद, श्री देवगौड़ा की जगह इंद्रकुमार गुजराल देश के नए प्रधानमंत्री बने उन्होनें विदेश विभाग अपने पास रखा। पाकिस्तान के साथ सीमा विवाद तथा कश्मीर समस्या के हल के लिए बार-बार प्रयास किए गए। आंतकवाद को खत्म करने का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र महासभा में रखा तथा विश्व के सबसे बडे लोकतंत्र भारत को स्थायी सदस्यता प्राप्त कराने के प्रयास किया। परमाणु अप्रसार संधि (1968) तथा व्यापक परमाणु निषेध (1996) पर हस्ताक्षर करने से दृढतापूर्वक मना किया।

अटल बिहारी वाजपेयी:-

श्री वाजपेयी ने एक कुशल, पूर्व राजनयिक बृजेश मिश्र को अपना प्रधान सचिव नियुक्त किया। भारत गुजराल सिद्धांत से दो कदम आगे बढ़ कर सभी पड़ोसियों के साथ मैत्री तथा सद्भावना के लिए अग्रसर हुआ। मई 1998 में पोखरन में भारत द्वारा 5 परमाणु परीक्षणों की पाकिस्तान, पांचो परमाणु-संपन्न देशो तथा जापान में तीव्र प्रतिक्रिया रही लेकिन अटल बिहारी वाजपेयी अडिग रहे। 1999 में पाकिस्तान के साथ मधुर संबंध बनाने के लिए लाहौर की यात्रा की। लेकिन पाकिस्तान ने कारगिल पर कब्जा करने का प्रयास किया जिसे भारतीय सेना ने असफल बना दिया। 2001 में 'पूर्व की ओर देखो' नीति के तहत वियतनाम और इन्डोनेशिया की सफल यात्राएं की।

डॉ. मनमोहन सिंह के काल में भारतीय विदेश नीति:-

डॉ. मनमोहन सिंह, मई 2004 में अनेक दलों की मिली-जुली सरकार के नेता के रूप में प्रधानमंत्री बने। उन्होनें विदेश मंत्रालय का कार्यभार श्री नटवर सिंह को सौंपा लेकिन 2005 में ईराकी तेल घोटाले में आरोपित होने के कारण मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। 1991 के बाद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के काल में सर्वाधिक महत्व विदेश नीति पर दिया गया। मनमोहन सिंह 1991 में वित्तमंत्री के पद भी कार्यरत थे उन्हें अर्थव्यवस्था में विशेष रूचि थी लेकिन सभी मामलों पर ध्यान दिया। कश्मीर समस्या को सुलझाने के भी भरपूर प्रयास किए गए। सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने के प्रयास किए। 2004-2014 तक लगभग सभी देशों से मधुर संबंध बनाने के लिए वार्ताएं तथा समझौते किए गए।

मोदी युग तथा भारतीय विदेश नीति:-

2014 के आम चुनाव में कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा तथा 1991 के बाद कोई दल स्पष्ट बहुमत के साथ सरकार बनाने में सफल हुआ। श्री नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने। वे पहले भी तीन कार्यकाल के लिए गुजरात के मुख्यमंत्री रह चुके थे। उन्होंने भारत को विश्व पटल पर समृद्ध बनाने के लिए विदेशों के दौरे किए। भारत सरकार ने पडोसी देशों, सार्क देशों, आसियान तथा अन्य देशों के साथ संबंधों को मजबुती प्रदान की।

भारत-चीन डोकलाम विवाद का शांतिपूर्ण हल करने का प्रयास किया गया। बांग्लादेश के साथ 'चार बीघा कोरिडोर' की समस्या को भी हल कर लिया गया। छोटे देशों जैसे नेपाल

www.ignited.in

भूटान को आर्थिक सहायता प्रदान करके संबंध सुदृढ़ बनाए गए। कश्मीर समस्या के स्थायी हल का प्रयास किया गया परंतु पाकिस्तान के सहयोग के बिना इसे हल नहीं किया जा सका। इस काल में भारत ने अमेरिका, रूस तथा फ्रांस से भी अपने रिश्ते मजबुत बना लिए। आतंकवाद के मुद्दे को भी विश्व स्तर पर हल करने का प्रयास किया।

निष्कर्ष:-

भारत विदेश नीति के बदलते स्वरूप में भारत ने विशेष गति से विकास किया है। गुटनिरपेक्षता की नीति भारत की विदेश नीति का एक अहम हिस्सा रहा है। जो न केवल दो गुटों में शामिल होने से बचाता है बल्कि सभी देशों से एक समान व्यवहार करने का मार्ग प्रशस्त करता है। भारतीय विदेश नीति शंाति बनाए रखने पर अधिक विश्वास करती है।

संदर्भ सूची

वी.एन.खन्ना एवं लिपाक्षी अरोड़ा, भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा॰ लि॰ नोएडा।

डा॰ बी. सिंह गहलौत, भारतीय विदेश नीति, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।

आर॰एस॰ यादव, अंक-जुलाई 2018।

डॉ. ब्रजेंद्र प्रताप गौतम, भारत की विदेश नीति।

Corresponding Author

Mohit*

M.A. (Political Science), NET Qualified

mohitj98@ymail.com